गाँधीवादी परिप्रेक्ष्य में सत्याग्रह की विविध पद्धतियाँ

*राम प्रकाश भारी

शोध सारांश

महात्मा गांधी भारत के उन महापुरुषों में से एक थे, जो चिन्तन एवं कार्यक्षेत्र में समान रूप से सक्रिय थे। सत्याग्रह गांधी जी के राजनीतिक सिद्धान्तों का एक आधारभूत तत्व है। गांधी ने सत्याग्रह का प्रचलित शोषणकारी नीतियों के विरूद्ध प्रथम सफलतम प्रयोग किया। सत्य एवं अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह गांधी के हाथों में भारतीय स्वाधीनता संघर्ष का अति महत्वपूर्ण साधन बन गया, जिसका प्रयोग दक्षिण अफ्रीका से प्रारम्भ होकर स्वतन्त्रता प्राप्ति तक किया जाता रहा। गांधी का सत्याग्रह सिद्धान्त पश्चिमी और भारतीय ग्रंथों का गहन अध्ययन में निष्क्रिय प्रतिरोध से शुरू होकर अंततः सत्याग्रह तक था। प्रारम्भ में 'सदाग्रह' का अर्थ अच्छे उद्देश्य में दृढ़ता सुझाया गया था, लेकिन गांधी ने इसे सत्याग्रह में बदल दिया। सत्याग्रह का सिद्धान्त 'द सर्मन ऑन द माउण्ट', भगवद गीता, टॉल्स्टाय और थोरो से लिया गया था। गांधीजी ने निष्क्रिय प्रतिरोध के स्थान पर 'सत्याग्रह' शब्द को प्राथमिकता दी, जिसका अर्थ है – सत्य पर अडिग रहना। गांधीजी का सत्याग्रह दर्शन सत्य के सर्वोच्च आदर्श से उत्पन्न हुआ है। गांधीजी के मत में सभी प्रकार के अन्याय, उत्पीड़न और शोषण के विरूद्ध आत्मबल का प्रयोग ही सत्याग्रह है। सत्याग्रह की प्रविधियों में असहयोग को प्रथम विधि माना जाता है और हड़ताल, हिजरत, उपवास, धरना, सामाजिक बहिष्कार एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन गांधीवादी सत्याग्रह की असहयोग पद्धतियाँ/तकनीक मानी जाती है तथा रचनात्मक एवं मूल्य परिवर्तनात्मक आयाम इसके विविध पक्ष हैं। 1917 में गांधीजी ने चंपारन (बिहार) से भारत में प्रथम बार सत्याग्रह आंदोलन चलाया, जिसकी सफलता से भारतीय राजनीति में एक नये युग की शुरूआत हुई। गांधीजी ने सत्याग्रह को सार्वभौमिक महत्व के कानून के साथ–साथ जनमत को शिक्षित करने की प्रक्रिया के रूप में देखा अतः सत्याग्रह विरोध का सबसे बड़ा उपकरण/साधन कहा जा सकता है।

संकेताक्षर : सत्याग्रह, गांधी, निष्क्रिय प्रतिरोध, आत्मबल, पद्धतियाँ

प्रस्तावना

वर्तमान समाज में हिंसा की जिस घातक प्रवृत्ति ने विस्तार पाया है, उससे मानव जाति के बचाव का एकमात्र मार्ग सत्य और अहिंसा की शरण लेना है अतः गांधीजी ने हिंसा का मुकाबला करने की जिस अहिंसक प्रविधि का विकास किया है उसे सत्याग्रह कहा जाता है।[1]

''साहित्यिक दृष्टि से सत्याग्रह एक संयुक्त शब्द है –
जो सत्य+आग्रह शब्द से मिलकर बना है।'' – गांधी

सत्याग्रह सिद्धान्त

साधारण भाषा में सत्याग्रह बुराई को दूर करने अथवा विवादों को अहिंसक तरीके से दूर करने का एक तरीका है। साधारण भारतीयों के लिए यह अंग्रेजी साम्राज्य के विरूद्ध स्वतंत्रता की लड़ाई का तरीका था। **प्रो. एन.के. बोस** के शब्दों में ''सत्याग्रह अहिंसक तरीकों द्वारा युद्ध संचालन का एक तरीका है। **डॉ. कृष्णलाल**

श्रीधारणी के अनुसार सत्याग्रह अहिंसक, सीधी कार्यवाही है।'' सत्याग्रह 'आत्मानुभूति और संयोग' की कला है। सत्याग्रह शब्द का अर्थ है – सत्य पर अडिग रहना। सत्याग्रह शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में किया था, यद्यपि दक्षिण अफ्रीका में गांधी ने 'निष्क्रिय प्रतिरोध' सत्याग्रह के अर्थ में किया था, परन्तु बाद में उन्होंने इन दोनों में भेद कर सत्याग्रह को नैतिक अस्त्र माना।[2]

जब गांधी ने सत्य का अहिंसा के साथ पालन किया, तो उन्होंने उसे 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' कहा। सत्याग्रह और कुछ नहीं हे, केवल इस प्रयोग का एक रूप है अर्थात् सत्य और अहिंसा प्राकृतिक और सामाजिक अवस्था की नींव है।[3] मगन लाल गांधी ने 'सदाग्रह' शब्द का सुझाव दिया था, जिसे गांधीजी ने सत्याग्रह में रूपान्तरित कर दिया।[4]

सत्याग्रह गांधीजी के राजनीतिक सिद्धान्तों का एक आधारभूत तत्व है, जिसके अन्तर्गत निहित स्वार्थों द्वारा की जाने वाली शक्ति की प्रतिस्पर्धा में व्यक्ति स्वनिर्णय द्वारा सत्य तथा सम्यकता का पक्ष पोषण करता है। व्यक्तिगत असहयोग से लेकर व्यापक स्तर पर संगठित सविनय अवज्ञा तक सत्याग्रह के अनेक रूप हैं। विनोबा भावे की यह मान्यता थी कि भूदान स्वयं एक प्रकार का सत्याग्रह है।[5] गांधीजी को सत्याग्रह की अवधारणा को विकसित करने में दस वर्षों से भी अधिक का समय लगा। उनकी सत्याग्रह की अवधारणा विभिन्न विचारकों से प्रभावित थी। उन्होंने ईसा मसीह को प्राणीमात्र के प्रति प्रेम के संदेश का देवदूत माना। टॉलस्टॉय की इस विचारधारा ने उनके मनो–मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डाला कि **पाप से घृणा करो, पापी से नहीं**। अतएव उन्होंने कभी भी अपने सत्याग्रह आंदोलन के दौरान विरोधी पक्ष से घृणा नहीं की बल्कि बुराई और अन्याय का प्रतिरोध किया।[6] सत्याग्रह सिद्धान्त का उद्देश्य यह दिखाना था कि किस तरह सद्विवेकी व्यक्ति हर सामाजिक दुर्व्यवहार और अनुभागीय हित के खिलाफ न्याय की अपील में सभी अत्याचारों के खिलाफ सतय और स्वाधीनता की पुष्टि के लिए कार्यवाही में संलग्न हो सकता है। भारतीय समाज के लिए गांधीजी का दृष्टिकोण एवं सत्याग्रह और स्वराज आंतरिक रूप से जुड़े हुए थे। स्वराज का अर्थ केवल स्वतन्त्रता या स्वशासन नहीं था बल्कि इसमें भारतीय समाज की प्रमुख समस्याओं का समाधान भी शामिल था।[7]

सत्याग्रह एवं निष्क्रिय प्रतिरोध

कुछ राजनीतिक विचारक सत्याग्रह एवं निष्क्रिय प्रतिरोध में कोई विशेष अन्तर नहीं करते और दोनों को एक–दूसरे का पर्याय मानते हैं जबकि वास्तविकता यह है कि सत्याग्रह और निष्क्रिय प्रतिरोध एक–दूसरे से बहुत कुछ अंशों में भिन्न है। जहाँ निष्क्रिय प्रतिरोध एक राजनीतिक हथियार है वहीं सत्याग्रह आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक एक नैतिक शस्त्र है। वैसे गांधीजी ने निष्क्रिय प्रतिरोध को अहिंसा के शाश्वत सिद्धान्त पर आधारित माना है लेकिन उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में ही अपने सत्याग्रह को निष्क्रिय प्रतिरोध से भिन्न माना था। गांधीजी के अनुसार निष्क्रिय प्रतिरोध दुर्बल व्यक्ति का शस्त्र है। जिसमें वह अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हिंसा का सहारा भी ले सकता है। गांधी ने निष्क्रिय प्रतिरोध का सबसे पहले प्रयोग दक्षिण अफ्रीका में किया था लेकिन गांधीजी के सहयोगियों एवं मित्रों ने उनका ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि यूरोप और ब्रिटिश आंदोलनकारियों ने निष्क्रिय प्रतिरोध के स्थान पर सत्याग्रह शब्द का प्रयोग किया। सत्याग्रह एक ऐसी तलवार है जिसके सभी ओर धार है उसे जैसे चाहे धार में ला सकते हैं। उसे काम में लेने वाला और जिस तरह वह काम में लाई जाए दोनों सुखी होते हैं। वह खून नहीं बहाती, पर काट गहरी करती है। उस पर जंग नहीं लगता, न उसे कोई चुरा ही सकता है। सत्याग्रही की तलवार को म्यान की जरूरत नहीं होती और उसे कोई छीन भी नहीं सकता। सत्याग्रह विनम्रता का प्रतीक होता है, जो क्षति नहीं पहुँचाता। जीसस क्राइस्ट का उदाहरण निष्क्रिय प्रतिरोध का नहीं, सत्याग्रह का उदाहरण है।[8]

सत्याग्रह की पद्धतियाँ

सत्याग्रह की विभिन्न प्रणालियाँ हैं, इसकी तकनीक बहुमुखी है। सत्याग्रही बुराई का विरोध करता है, विरोधी का नहीं। उसमें गोपनीय का अभाव रहता है। वह किसी प्रकार का दुराव छिपाव नहीं करता। विरोधी पक्ष को नीचा दिखने का प्रयास इसमें कदापि नहीं होना चाहिए। गांधी के शब्दों में ''हम प्रणालियों, पद्धतियों पर आक्रमण कर सकते हैं किंतु व्यक्तियों पर कदापि नहीं।''

आत्मपीड़न सत्याग्रह का प्रमुख नियम है जिसके द्वारा वह विरोधी पर विजय प्राप्त करता है किंतु आत्मपीड़न इतना अधिक भी न हो कि विरोधी का हृदय परिवर्तन से पूर्व स्वयं सत्याग्रही अंदर से टूटने लगे। सत्याग्रही को नैतिक युद्ध की सारी चालों का ज्ञान होना चाहिए। उसकी आशाएं आकांक्षाएं कभी हार ना माने। उसमें सहिष्णुता कूट–कूट कर भरी हो।

सत्याग्रह के विविध आयाम

महात्मा गांधी सुकरात को प्रथम सत्याग्रही मानते थे। उन्होंने 'एपोलॉजी एण्ड क्राइटो' नामक पुस्तक का पुनर्लेखन भी किया। उसका नाम 'द स्टोरी ऑफ सत्याग्रह' रखा। इस पुस्तक में गांधी ने सत्याग्रह के विविध आयाम स्वीकार किये –

प्रथम – आंदोलनात्मक एवं संघर्षात्मक प्रक्रिया। दिवाकर महोदय ने इसे इग्रेसिव सत्याग्रह कहा।

द्वितीय – भावनात्मक आयाम का पर्याय जिसमें रचनात्म्क कार्यक्रम सम्मिलित थे। चरखा, कताई–बुनाई, इसी में समाविष्ट थे।

तृतीय – मूल्य परिवर्तनात्मक आयाम जिसके द्वारा सत्याग्रही समाज में मूल्य परिवर्तन करता है।[9]

आंदोलनात्मक सत्याग्रह

सत्याग्रह का प्रथम आयाम संघर्ष की प्रक्रिया के रूप में है। इसका आरम्भ दक्षिण अफ्रीका में हुआ और भारत में चंपारन बिहार से स्वतंत्रता प्राप्ति तक किसी न किसी रूप में चलता रहा। भारत के तीन जन आंदोलन असहयोग, सविनय अवज्ञा तथा भारत छोड़ो, आंदोलन इसी संघर्ष की पद्धति पर आधारित थे।

असहयोग आंदोलन

गांधी के अनुसार कोई राज्य जनता के सहयोग से ही अत्याचार व शोषण करता है। यदि जनता शासक, राज्य के साथ सहयोग करने से इंकार कर दे तो राज्य शोषण व अनाचार नहीं कर पायेगा। गांधी के असहयोग आंदोलन के विभिन्न कार्यक्रम इस प्रकार थे –

- सरकारी पदों उपाधियों का त्याग, स्थानीय संस्थाओं की सदस्यता से त्याग
- सरकारी उत्सवों, दरबारी कार्यक्रमों में भाग न लेना
- सरकार द्वारा संचालित एवं मान्यता प्राप्त स्कूल एवं कॉलेजों का बहिष्कार
- सरकारी न्यायालयों एवं मुकदमें बाजी का बहिष्कार एवं पंचायती संस्थाओं की स्थापना
- सैनिक कर्मचारियों द्वारा विदेश में नौकरी का बहिष्कार
- स्वदेशी माल का प्रचार–प्रसार एवं विदेशी माल का बहिष्कार।

सामाजिक बहिष्कार भी असहयोग में ही समाविष्ट है किंतु इसका प्रयोग जटिल प्रक्रिया है। यह उन व्यक्तियों के विरूद्ध उपयोगी है जो सामाजिक बहिष्कार को दण्ड के रूप में न लेकर अनुशासन की कार्यवाही के रूप में स्वीकार करें।

आर्थिक बहिष्कार में विदेशी वस्तुओं एवं उत्पादों का बहिष्कार का सिद्धांत है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गांधी ने अंग्रेजी माल का बहिष्कार किया। कांग्रेस के प्रस्ताव में ''अहिंसक युद्ध में विदेशी जाति, शोषक के साथ वाणिज्यिक संबंध विच्छेद करना वैध है। अतः इसे उग्रता पूर्व चलाया जाना चाहिए।''

धरना

धरना शब्द को गांधी कभी पसन्द नहीं करते थे। गांधी के अनुसार धरना अनुचित दबाव डालने का भोंडा तरीका है। धरने पर बैठा व्यक्ति जानता है कि विपक्षी उसके शरीर को रौंदता हुआ आगे नहीं बढ़ सकता। अतः वह सामने वाले पक्ष की स्थिति बहुत अपमानजनक दुविधापूर्ण बना देता है। गांधी धरने से अभिप्राय अंग्रेजी के पिके टिंग से लेते थे जिसमें धरना देने वाले का यह कर्त्तव्य है कि वह जनमत को जगाये। उपर्युक्त वातावरण निर्मित कर सामने वाले को चेतावनी दे। उसे हृदय परिवर्तन द्वारा वस्तुस्थिति समझाये।

नागरिक अवज्ञा/सविनय अवज्ञा

गांधी ने यह शब्द हेनरी डेविड थोरो से लिया। अंगेजी शब्द सिविल डिसओबिडियंस का हिन्दी रूपान्तरण नागरिक अवज्ञा है। राजनीति शास्त्र में सिविल का पर्याय यह व्यक्ति जिसका अपना व्यक्तित्व हो जो नियम उपनियम की पालना करता हो। अतः सविनय अवज्ञा नागरिक अवज्ञा दोनों ही अर्थों में प्रचलित है। गांधी थोरों के मत से अधिक सहमत थे। उनके अनुसार यदि दृढ़ नैतिक अल्पमत कोशिश करें तो वह बहुमत की बुराइयों को सुधारने की क्षमता रखता है।

गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन 5 अप्रैल को नमक बनाते हुए सरकारी कानून की अवज्ञा करके आरम्भ किया।

हिजरत

हिजरत का अर्थ स्वैच्छिक स्थायी निवास का परित्याग। दमन के स्थान को दमन के विरोध स्वरूप त्याग कर अन्यत्र चले जाना हिजरत है। गांधी मुहम्मद साहब की मक्का से मदीना की यात्रा को हिजरत का पर्याय मानते थे। गांधी के अनुसार वह व्यक्ति जो अन्याय के प्रतिकार की हिंसक शक्ति रखते हुए स्थान छोड़ते हैं न कि किसी डर या भय के। 1919 में बारदौली एवं 1939 में लिम्बड़ी एवं विठ्ठलगढ़ की जनता को हिजरत की अपील की।

बारदौली सत्याग्रह – बारदौली सत्याग्रह गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम एवं हिजरत का विशिष्ट उदाहरण है। बारदौली से ही गांधी 1922 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन करने वाले थे किन्तु 1922 में असहयोग आंदोलन के दौरान उत्पन्न हिंसा से इसे स्थगित कर दिया गया। कुछ वर्ष प्रतिक्षा के पश्चात् गांधी ने बारदौली में सत्याग्रह आरम्भ किया। बारदौली में किसानों की बैठक में प्रभु/खुदा के नाम पर लगान न देने की प्रतिज्ञा की गई। बारदौली की महिलाओं ने भी पटेल के निर्णयों का स्वागत किया एवं आंदोलन में सहयोग करने का संकल्प किया। पटेल ने सम्पूर्ण क्षेत्र को 13 कार्यकर्ता शिविरों में बांट दिया। प्रतयेक शिविर के संचालन के लिए अनुभवी नेता नियुक्त किया। 100 राजनैतिक कार्यकर्ता और 1500 स्वयंसेवी इस आंदोलन की सेना थे। एक अलग से प्रकाशन विभाग बनाया गया। सरल भाषा में 'बारदौली सत्याग्रह पत्रिका' का प्रकाशन किया गया।

रायबरेली, आगरा में हिजरत का विशेष प्रभाव रहा। हिजरत के यह प्रयोग प्रभावपूर्ण थे किन्तु यह पद्धति कठिन थी। अतः इसका प्रयोग गांधी द्वारा आंदोलन के दौरान कम किया गया। फिर भी इसकी सफलता के सम्बन्ध में गांधी ने कहा – 'इस प्रकार के संघर्ष चाहे कुछ भी हो, यह स्वराज की प्राप्ति के संघर्ष नहीं है लेकिन इस तरह के संघर्ष की हर कोशिश स्वराज के करीब पहुँचा रही हैं। स्वराज की मंजिल तक पहुचने में शायद स्वराज के लिए सीधे संघर्ष से कहीं ज्यादा सहायक सिद्ध हो सकते हैं।[10]

उपवास

उपवास सत्याग्रह का अत्यंत शक्तिशाली रूप है। गांधी ने उपवास को व्यक्तिगत साधन से सामाजिक साधन बना दिया। उपवास विपक्षी को कष्ट न देकर स्वयं कष्ट सहते हुए किया जाता है। आत्मपीड़न द्वारा विपक्षी के हृदय में न्याय और सत्य को जगाया जाता है। उपवास सत्याग्रह है जबकि भूख हड़ताल दुराग्रह। गांधी के अनुसार ''मेरा दृढ़ विश्वास है कि जैसे जैसे हमारा शरीर मिटता है आत्मा उन्नत होती है। उपवास के कई रूप होते हैं। व्यक्तिगत उपवास, सामूहिक उपवास, क्रमिक उपवास, अनशन एवं सांकेतिक उपवास आदि।

उपवास एवं भूख हड़ताल को एक अर्थ में लिया जाता है किन्तु गांधी उपवास एवं भूख हड़ताल को अलग–अलग मानते थे। गांधी के अनुसार उपवास सत्याग्रह है, भूख हड़ताल दुराग्रह। उपवास का गांधी के विचारानुसार मन एवं आहार से निकट सम्बन्ध है। उपवास के कई रूप हैं। व्यक्तिक उपवास जिसका प्रयोग गांधी ने अपने व्यक्तिगत जीवन में कई बार किया। सामूहिक उपवास, जो विभिन्न आंदोलनों के दौरान रखे गये तथा क्रमिक या सांकेतिक उपवास आदि। गांधी ने सभी प्रकार के उपवास रखे।

गांधी ने उपवास के सभी रूपों का प्रयोग किया और प्रभावी रहे। गांधी ने उपवास का आरम्भ व्यक्तिगत जीवन से राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान किया। क्रमिक उपवास से 21 दिन के उपवास का ऐतिहासिक कदम भी उठाया।

उपवास के प्रयोग – उपवास के प्रयोग गांधी ने टॉलस्टॉय आश्रम दक्षिण अफ्रीका में किये। उन दिनों दूध व अनाज का त्याग कर फलाहार का आरम्भ किया और उन्हीं दिनों संयम हेतु उपवास भी शुरू किये। मि. कैलन बैफ भी उनके साथ उपहास रखते थे। टॉलस्टॉय आश्रम में पारसी हिन्दु–इसाई सभी थे और गांधी ने सभी को उपवास के लिए प्रेरित किया तथा सभी एकाशन और उपवास का महत्व समझने लगे। आश्रम में किये गये उपवास के संबंध में गांधी का कहना है कि 'मैं जो भी अच्छा काम करता हूं, उसमें अपने साथ रहने वालों को सम्मिलित करने का प्रयास हमेशा करता हूँ। गांधी की इसी प्रवृत्ति और प्रयोग ने उपवास को सत्याग्रह का सार्वजनिक एवं प्रभावी उपक्रम बना दिया।[11] उपवास का प्रथम सार्वजनिक प्रयोग गांधी ने प्रवासी भारतीयों के प्रति ब्रिटिश शोषणकारी नीति के प्रत्युत्तर 1906 में किया। यह उस पंजीकरण कानून के विरोध में किया गया, जिसे हर भारतीय को 24 घंटे अपने पास रखना पड़ता था। सत्याग्रह का यह प्रथम प्रयोग था अतः गांधी ने सत्याग्रहियों के मनोबल को बनाये रखने के लिए उपवास रखे। यह गांधी के उपवास का ही प्रभाव था कि अशिक्षित अनभिज्ञ सरकार से भयभीत रहने वाले प्रवासी भारतीय सरकार के विरूद्ध अपने अधिकारों की मांग के लिए एकजुट हो गये। सत्याग्रह के नवीन प्रयास को सफल बना दिया। गांधी के अंतिम दिनों में किये गये उपवास ने उनके जीवन एवं कृतित्व को चिरस्मरणीय एवं सत्याग्रह की अमूलय निधि बना दिया, जो सदैव हिंसा के इस युग में मानवता का पथ प्रदर्शक करती रहेगी। गांधी द्वारा किये गये उपवासों में 1943 का उपवास ऐतिहासिक उपवास था, जो राष्ट्रीय आंदोलन एवं उपवास दोनों ही दृष्टि में अति महत्वपूर्ण कदम था। यह उपवास 19 फरवरी से 5 मार्च 1943 तक रखा गया था। अहमदाबाद संघर्ष एवं उपवास, 1919 जलियावाला बाग एवं प्रिंस के आगमन के दौरान प्रायश्चित स्वरूप अवकाश, अछूतोद्वार एवं उपवास, भारत छोड़ो आंदोलन के ऐतिहासिक उपवास और नोआरवली, शांती स्थापना उपवास महत्वपूर्ण हैं।[12]

हड़ताल

हड़ताल अन्याय के खिलाफ प्रतीकात्मक प्रतिरोध है। अस्थायी समय के लिए अपना निजी कार्य नौकरी व्यवसाय का त्याग, हड़ताल में स्कूल कॉलेजों में न जाना भी शामिल है। अर्थात् अपने दैनिक कार्य स्थगित कर देना।

गांधी के अनुसार हड़ताल न्यायपूर्ण होनी चाहिये। हड़ताल आत्मशुद्धि के लिए किया जाने वाला स्वैच्छिक प्रयत्न है। हड़तालियों की मांग स्पष्ट एवं उचित होनी चाहिए। गांधी ने 1918 में अहमदाबाद में मिल मालिकों के शोषण के विरूद्ध हड़ताल रखी। यह 21 दिन तक चली। सत्याग्रही की हड़ताल अहिंसात्मक होनी चाहिये।

हड़ताल सत्याग्रह का एक अस्त्र हैं। हड़ताल का अर्थ – अन्याय के खिलाफ प्रतिकात्मक प्रतिरोध। गांधीजी के अनुसार हड़ताल आत्मशुद्धि के लिए किया जाने वाला स्वैच्छिक प्रयत्न हैं जिसका गन्तव्य स्वयं कष्ट सहन करके विरोधी का ह्रदय परिवर्तन करना है। हड़ताल करने वाले की मांग स्पष्ट एवं उचित होनी चाहिए।[13] 1 नवम्बर 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स के भारत आगमन पर पूरे बम्बई में हड़ताल रखी गयी। इसी दिन गांधी ने एलिफिंस्टन मिल के अहाते में हड़ताली मजदूरों को सम्बोधित किया। इस प्रकार प्रिंस ऑफ वेल्स जहां भी जाते हड़ताल, विरोधी कपड़ों की होली जलाकर लोग विरोध प्रदर्शन करते। विरान सड़कों एवं बंद दरवाजों से उनका स्वागत किया गया।

1919 से 1920 में हड़तालों की देश में लहर सी आ गई थी। 4 नवम्बर से 2 दिसम्बर 1919 कूलन मिल्स कानपुर में 17 हजार लोगों ने हड़ताल रखी। 1 जनवरी 1920 में रेल्वे वर्क्स जमालपुर 16 हजार लोग हड़ताल पर गये। बम्बई में 20 हजार, रंगून में 20 हजार मिल कामगारों ने ब्रिटिश इंडिया नेविगेशन कम्पनी बम्बई के 10 हजार लोगों ने हड़ताल रखी। 1920 में केवल बंगाल में 110 हड़तालें हुई। राष्ट्रवादी आंदोलन का हड़ताल के माध्यम से प्रभाव भी बढ़ा। 1921 में बंगाल पटसन कारखाने में 137 हड़ताले हुई। यूरोपीय प्रभुत्व के विरूद्ध खान मालिकों ने भी हड़तालों का समर्थन किया। इस आंदोलन के दौरान श्रमिकों ने पर्याप्त संख्या में भाग लिया। ऐसा दृश्य आने वाले समय में देखने को नहीं मिला।[14]

रचनात्मक एवं मूल्य परिवर्तनात्मक आयाम

रचनात्मक कार्यक्रम को सत्याग्रह का भावात्मक पक्ष भी कहा जाता है। अन्याय, शोषण, अत्याचार आदि के प्रति और नई व्यवस्था के निर्माण के लिये रचनात्मक कार्यक्रम सत्याग्रह के अवियोज्य अंग है। रचनात्मक कार्यक्रम सत्याग्रह को पूर्णतः अहिंसक बनाता है। रचनात्मक कार्यक्रम पन्द्रह प्रकार के हैं, जिन्हें पन्द्रह सूत्री कार्यक्रम भी कहा जाता है। सत्याग्रह का मूल्य परिवर्तनात्मक आयाम सत्याग्रही एवं प्रतिपक्षी के बीच होता है। उदाहरणार्थ दस्यूराज अंगूलिमान का महात्मा बुद्ध के समक्ष कलिंग विजय के पश्चात अशोक का जीवन मूल्य परिवर्तित हो गया था।[15]

निष्कर्ष

सत्याग्रह के दौरान गांधी ने असहयोग के विभिन्न स्वरूपों/तकनीक की विवेचना की, जिसके अन्तर्गत हड़ताल, उपवास, हिजरत, धरना सामाजिक बहिष्कार एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन कार्यक्रम अपनाये गये। आरम्भिक प्रयोग से 1947 तक इन पद्धतियों के प्रयोग में अंतर्विरोध दिखाई पड़ता है। सत्याग्रह आंदोलन में हड़ताल का आंशिक प्रयोग दक्षिणी अफ्रीकी संघर्ष के दौरान किया गया। यही हड़ताल 1918 के अहमदाबाद मिल–मालिक एवं मजदूर संघर्ष में गांधी का अहिंसक हड़ताल का व्यापक एवं प्रभावी उपक्रम बन गया। भारत लौटने के बाद गांधी ने भारतीयों की स्थिति को 'सत्याग्रही' की दृष्टि से देखा। राष्ट्रीय आंदोलन में गांधी के उपहास सत्याग्रह की नवीन संघर्ष पद्धति के प्रयोग एवं सफलता को प्रकट करते हैं। गांधी ने उपवास जैसे व्यक्तिगत साधन को स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान सार्वजनिक साधन बना दिया था। 1932 के उपवास उनके सामाजिक परिवर्तन हेतु रचनात्मक कार्यक्रम का अभिन्न अंग था। सत्याग्रह और अहिंसा के विश्वास में किसी व्यतिरेक का परिचायक नहीं थे।

गांधी के करिश्माई परिचय को बारदौली सत्याग्रह के समय 'हिजरत' जैसे कठिन अस्त्र का जनसाधारण द्वारा धैर्य पूर्वक प्रयोग से समझा जा सकता है। आज भी गांधी के हड़ताल, धरना और उपवास के कार्यक्रम सफल एवं लोकप्रिय हैं। लेकिन आजकल होने वाली हड़तालें–हिंसक तोड़फोड़ का पर्याय बन गयी है और उपवास मुख्य हड़ताल या दुराग्रह का प्रतीक है, जबकि गांधीवादी सत्याग्रह शांतीपूर्ण, अहिंसक, आडम्बर एवं दिखावे से परे होते थे। मेधा पाटेकर के उपवास की सफलता गांधी चिन्तन की प्रभाविकता एवं वर्तमान समस्याओं के समाधान में कारगर उपाय को प्रतिबिम्बित करते हैं।

***शोधार्थी**
राजनीति विज्ञान विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर (राज.)

संदर्भ सूची

1. शर्मा, प्रो. बी.एम., शर्मा, डॉ. सविता, गांधी दर्शन के विविध आयाम, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 8वां संस्करणः 2019, पृ.सं.182.
2. चन्देल, डॉ. धर्मवीर, गांधी चिन्तन के विभिन्न पक्ष, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, चतुर्थ संस्करणः 2019, पृ.सं.63, 64.
3. वर्ल्ड फोकस (विशेषांक) मासिक पीयर रिव्यूड/रैफरीड रिसर्च जनरल ISSN 2231–0185, अंक 104, नवम्बर 2020, पृ.सं.35.
4. प्रसाद, महादेव, महात्मा गांधी का समाज–दर्शन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़, 1989, पृ.124.
5. वर्मा, वी.पी., गांधीयन कॉन्सेप्ट ऑफ स्टेट, लक्ष्मीनारायण अहमदाबाद, 1965, पृ.सं.9.
6. धवन, गोपीनाथ, दि पॉलिटिकल फिलॉसफी ऑफ महात्मा गांधी, नई दिल्ली, दि गांधी पीस फाउण्डेशन, 1990, पृ.सं.25, 27.
7. रेड्डी, प्रो. जी. राम, भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका ISSN 452ग (अर्द्धवार्षिक प्रकाशन) जुलाई–दिसम्बर 2023, पृ.सं.255.
8. शर्मा, प्रो. बी.एम. एवं शर्मा डॉ. सविता, गांधी दर्शन के विविध आयाम, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 8वां संस्कारणः 2019, पृ.सं.184.
9. प्रसाद, उपेन्द्र, गांधीवादी समाजवाद, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ.सं.40–41.
10. पाल, विपिन चन्द्र, भारत का स्वतन्त्रता संग्राम, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1998, पृ.सं.135, 154.
11. गांधी, मोहनदास करमचन्द, मेरा जीवन ही मेरा संदेश, नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, 1986, पृ.सं.50.
12. गांधी, एम.के., दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास, नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, 1968, पृ.सं.31.
13. प्रसाद उपेन्द्र, गांधीवादी समाजवाद, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ.सं.45.,
14. सरकार, सुमित, आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं.240.
15. प्रसाद, उपेन्द्र, गांधीवादी समाजवाद, नमन प्रकाशन, दिल्ली, संस्करणः 2001, पृ.सं.50.